

विचार बिन्दु

सज्जनों की रीति यह है कि कोई अगर उनसे कुछ मांगे तो वे मुख से कुछ न कहकर, काम पूरा करके ही उत्तर देते हैं। -कालिदास

देश एवं प्रदेशों में पेंशन बचाओ आंदोलनों की अपरिहार्यता

राजकीय एवं अन्य पेंशन धारकों को पेंशन मिलना अति आवश्यक है, यह उनके सेवानिवृत्त पश्चात् एक सम्मानपूर्वक जीवन निर्वाह का सबसे विश्वसनीय साधन होता है। रिटायरमेंट के पश्चात् कर्मियों को पता नहीं कितने दिन जीवित रहना है और कितने दिन उसकी पत्नी को? ऐसी असाधारण परिस्थिति में पूर्व की सरकारों ने अपने कर्मियों को पेंशन देने का प्रावधान किया, यह सिलसिला ब्रिटिश हुकूमत में तो था ही, संभवतः उससे पहले मुगल काल में भी प्रचलित हो? पेंशनकर्मी को उसके द्वारा दी गयी सेवाओं में योगदान के फलस्वरूप अर्जित विकास (भौतिक, सामाजिक, वृद्धि प्रचार व प्रसार आदि) के एवज में दी जाती है।

30 से 35 वर्ष के कार्य काल का आंकलन सांख्यिकीय मापदंडों से करना दुष्कर है अतः सरकारों ने पेंशन निर्धारण के लिए काफी विचार और मंथन करके कुछ नियम निर्धारित किये जिनमें समय-समय पर स्थिति के अनुसार सुधारकर बदलाव भी किया जाता रहा। मोटे तौर पर वर्तमान में कर्मियों को संतोषजनक सेवा के उपरांत आखिरी वेतन का आधा अंश (50 प्रतिशत) पेंशन देय होती है सेवा काल में निर्धारित अवधि में कमी होने पर पेंशन भी अनुपातिक हिसाब से कम निर्धारित होती है, इसके ऊपर मंहगाई भत्ता नियम के अनुसार और जुड़ जाता है, इस प्रकार कर्मियों को अपने शेष जीवन निर्वाह के लिए एक संतोषजनक राशि प्रतिमाह उपलब्ध होती रहती है। कर्मियों की मृत्यु होने पर उसकी पत्नी को शेष जीवन में पारिवारिक पेंशन मिलने का प्रावधान किया हुआ है, जो मूल पेंशन का लगभग 30 प्रतिशत होता है। इस प्रकार सामाजिक सिक्विटीटी की दृष्टि से यह अनुकूल ही है।

एकल परिवारों के चलते यदि ये व्यवस्था न हो तो बुजुर्गों किसके आगे हाथ फैलाएँ? उधार लेकर, घर का पैसा न बचकर या एक-दो घर झाड़ू-बर्तन सफाई और विकट स्थिति में भीख मांग कर जीवन काटना पड़ता है। कुछ समय पूर्व तक तो यह सब कुछ ठीक ही चल रहा था परंतु 2004 से केंद्र सरकार ने नयी पेंशन योजना लागू कर दी, जिस पर कोई सम्बाद्ध अथवा बहस नहीं हुयी, फलस्वरूप सरकार द्वारा सरसबन्ध बाग़ दिखाएने से नयी पेंशन योजना का उस समय कोई प्रतिरोध नहीं हुआ। जिन संस्थानों में पेंशन नहीं थी वहां कर्मियों को उसके द्वारा प्रतिमाह दिया प्रोविडेंट फण्ड और उतना ही अंशदान सरकारी जुड़ता रहता था जिस पर नियमानुसार ब्याज जुड़ता रहता था और सेवा निवृत्ति पर कर्मियों को पूरा प्रोविडेंट फण्ड दे दिया जाता था। इस पद्धति में अक्सर यह होता था कि कर्मियों का पूरा धन घर के किसी कार्य में खर्च हो जाता था तत्पश्चात् कर्मियों और उनकी पत्नी को बेवस होकर जीना पड़ता था, बच्चे बहुधा माता-पिता से किसी बहाने पर पैसे खर्च करवा लिया करते और सामाजिक स्तर पर कर्मियों बहुत कष्ट भोग कर मरता। कई तो विवश होकर आत्महत्या कर लेते, ऐसी स्थिति में जिस व्यक्तित्व में पेंशन की योजना सर्व प्रथम ईजाद कर लागू की हमें उसका शुक्रगुजार होना चाहिए।

नयी पेंशन के रचना कार के सोच को दाद देनी पड़ेगी कि उसने सभी पेंशन धारकों की जिंदगी को मटियामेट करने की ऐसी योजना बनाई जिसका लोग उस समय आंकलन नहीं कर सके। केंद्र सरकार में ऐसे अनेक वित्त मंत्री हुए जिन्होंने बजट से लेकर अन्य योजनाएं लागू की जो बाद में निवेशकर्ताओं को ले डूबीं। ऐसी एक योजना थी यू.एस.एस. 64, जिसमें सरकार ने दखल देकर लोगों का

कुछ धन वापिस करवाया था, मैं भी उस योजना का एक छोटा भुक्तभोगी हूँ। अभी चार-पांच वर्ष पहले मोदी जी ने नोट बंदी की थी, सुना गया था तब के एक विख्यात मंत्री ने दो कंटेनर जाली करंसी नोट छपवा कर अपने कोटों में बटवा दिए थे। मेरे पास इसका कोई सबूत नहीं है, ऐसी स्थिति में घर परक दे या रेड से कुछ होना नहीं था क्योंकि जब पता चला तब तक राशि बंद चुकी थी। मोदी जी संभवतः इस बात को छिपाकर आनन-फानन में नोट बंदी कर दी। यही एक तरीका बचा था उन जाली नोटों को चलाने में न आने देने का क्योंकि बाद में यह कहा गया कि रिजर्व बैंक द्वारा जारी लगभग

सभी नोट वापिस आ गए। अब वो जाली नोट बैंक में कैसे आते? खैर, सरकार में ऐसे नाटकीय कार्य होते रहे हैं और जनता मूर्ख बनकर उसी पार्टी की सरकार को पुनः चुनती रही। तो बात पेंशन की हो रही थी लिहाजा पुरानी पेंशन ही अभी तक सेवा निवृत्त कर्मियों के लिए अनुकूल रही है और अभी है। इसमें मंहगाई भत्ता आदि जुड़ते जाय तो कर्मियों का जीवन संतोष से कट जाता है। राजस्थान सरकार ने पहल कर नयी पेंशन स्कीम 2004 को हटा कर पुरानी पेंशन स्कीम पिछले बजट में पास करा कर फिर से लागू कर दी। इसमें अभी तक यह स्पष्ट नहीं है कि 2004 और इस वर्ष घोषणा की तिथि की अवधि में पुरानी पेंशन लागू होगी अथवा नहीं? कुछ भी हो मुख्यमंत्री ने जो सलाह सहता दिखाई है उस अवधि का भी वे कोई तोड़ निकाल इसे हल कर देंगे।

राज्य सरकार कई प्रकार की पेंशन लोगों को देती है परंतु अभी उनमें विषमता विद्यमान है जैसे विश्वविद्यालयों के कर्मियों को नियमित पेंशन न देना... इसमें कुछ विश्वविद्यालय छात्रों की अधिक संख्या के कारण कर्मियों को पेंशन देने में सक्षम हो सकते हैं लेकिन कुछ ही वर्षों में वे भी पेंशन देने में सक्षम नहीं होंगे। प्रदेश के सभी कृषि विश्वविद्यालय पेंशन की अनियमितता और अनिश्चितता से परेशान हैं। लगभग 12 वर्ष से कर्मियों न्यायलय की शरण में जाकर कुछ राहत पा लेते हैं, अभी तक 13 माह की पेंशन फिर बाकी हो गयी जो नहीं दी गयी है। न्यायालय ने दखल देकर 22 माह की बाकी पेंशन घटवा कर 10 माह जनवरी 2022 में करवा दी थी जो अब फिर बढ़ कर 13 माह हो गयी, कब तक पेंशनर्स कोर्ट के फेरे लगाते रहेंगे?

मुख्य मंत्री जी का कहना है कि यदि सरकार इनको पेंशन देगी तो अन्य लोग भी डिमांड करेंगे। ये केसा कथन है? दूसरे कौन? निश्चित रूप से वे पाकिस्तानी नहीं होंगे और यदि देश के नागरिक डिमांड करते हैं तो उनकी समस्या भी सरकार को ही सुलझानी पड़ेगी। उत्तर प्रदेश राज्य अपने सभी सेवा निवृत्त कर्मियों को पेंशन देकर से अधिक सालों से प्राइमरी से लेकर विश्वविद्यालय तक और वो भी सरकारी कोषालय से और सरकारी कर्मियों को पेंशन समान सभी सरकारी और प्राइवेट विद्यालयों, विश्वविद्यालयों के कर्मियों को दे रही है, वहां पेंशन धारकों की संख्या अपेक्षाकृत राजस्थान से कई गुना अधिक है। वहां किसी प्रकार का कोई विवाद आज तक नहीं सुना गया।

मुख्य मंत्री यदि विवेक से सोचे तो उनके एक निष्पक्ष से प्रदेश के सभी विश्वविद्यालयों की पेंशन समस्या सुलझ सकती है। वे स्वयं कई प्रकार की वित्तीय सहायता/पेंशन लोगों को देते हैं, जिनका खुलासा करना यहाँ उचित नहीं। कृषि विश्वविद्यालयों का स्थापना खर्च सरकार ने स्वयं बढ़ाया जो प्रतिवर्ष 10 से 12 करोड़ बैठता है। एक कृषि विश्वविद्यालय उत्तर में बीकानेर था दक्षिण में 1999 में उदयपुर ने बन गया, फिर जोधपुर, जोबनेर और कोटा में तीन और कृषि विश्वविद्यालय स्थापित कर संख्या पांच कर दी। इनका औचित्य क्या था? समझ से परे है। उदयपुर के समान यदि बाकि तीनों के लिए सम्बाद्ध भी करवाते तो हो सकता था एक केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय बन जाता, और सरकार अनेकों खर्चों से बच जाती। लेकिन जब बात वोट बैंक की हो तो उस स्थिति में लेख में कोई बात लिखना करना उचित नहीं मानता।

पेंशन पैमेंट के लिए एक संस्था गठित की जावे जिसमें केंद्र, प्रदेश व अन्य अपनी साझेदारी से उसमें अंशदान कर फण्ड निर्मित कर उससे सभी को पेंशन समान रूप से समान नियमों के तहत दी जा सके। सरकार से यह जिम्मेदारी अलग होनी चाहिए, भले ही सरकारी तंत्र से संचालित हो। अभी भी समय है प्रदेश का एक कृषि विश्वविद्यालय केंद्र के अधीन कर दिया जावे इसी प्रकार अन्य विषयों के विश्वविद्यालय भी यूनिवर्सिटी ग्रांट कमीशन, सी एस आई और केन्द्रीय उपक्रमों को सौंप कर वित्तीय भार से कुछ निजात पाई जा सकती है। कृषि विश्वविद्यालय से सम्बंधित सभी भी ऐसे सुझाव हो सकते हैं जिनसे वित्तीय भार कम किया जा सके। इन सबके बावजूद पेंशन पर सम्बाद्ध/आंदोलन होते रहने चाहिए लेकिन ऐसे आंदोलन रचनात्मक हों और सरकार से तालमेल रख ही निर्णय होकर लागू हों किसी कवि ने कहा है 'जेते पैर पसारिये जिन्ती लम्बी सौर'। सरकार अपने खर्चों की कम करके पेंशन फण्ड में योगदान कर सकती है, वर्तमान स्थिति में भी मैं ऐसे कई सुझाव दे सकता हूँ जिससे चार-पांच करोड़ की बचत हो सकती है।

-अतिथि सम्पादक,
प्रो.डॉ. वीर बहादुर सिंह,
(पूर्व कुलपति एवं डेयरीविज्ञान महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी वि.वि., उदयपुर)

अब कांग्रेस में पैराशूट से नहीं उतरेंगे नेता, पार्टी में पांच साल काम करने वालों को ही टिकट मिलेगा : अजय माकन

उदयपुर, (का.स.)। शीलों की नगरी में शुक्रवार से कांग्रेस के नवसंकल्प चिंतन शिविर का आगाज हो चुका है। गांधी परिवार के तीनों प्रमुख सदस्यों के साथ तमाम कांग्रेस के नेता उदयपुर पहुंच चुके हैं।

शिविर के पहले दिन शुक्रवार को कांग्रेस के महासचिव व राजस्थान प्रभारी अजय माकन ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि शिविर के बाद कांग्रेस पार्टी के ढांचे में आमूलचूल परिवर्तन होने जा रहा है। उन्होंने एक परिवार एक टिकट के फार्मुले के जवाब में कहा कि यह बात तथ्य है। किसी भी नेता का रिश्तेदार, बेटा या बेटी को टिकट नहीं मिलेगा जब वह पांच साल पार्टी में काम करेगा। यानी पैराशूट से कोई नेता नहीं उतारा जाएगा।

होटल अरावली ताज में कांग्रेस नेता अजय माकन ने बताया कि संगठन को लेकर बने कांग्रेस के पैनेल ने पार्टी में आमूलचूल परिवर्तन के लिए सुझाव दिए हैं। उन पर चर्चा की जा रही है। उन्होंने बताया कि कांग्रेस पार्टी के ढांचे में अब तक वही पद चले आ रहे थे जो सालों पहले थे। लेकिन अब उसमें बूथ लेवल से लेकर ऊपर तक बदलाव



उदयपुर में कांग्रेस के चिंतन शिविर में कांग्रेस महासचिव व राजस्थान के प्रभारी अजय माकन ने पत्रकार वार्ता को संबोधित किया।

किया जा रहा है। कुछ चीजें हमारे संविधान में पहले से थीं, लेकिन उनको अमल में नहीं लाया जा सका।

उन्होंने कहा कि भाजपा की तरह ही अब कांग्रेस में भी मंडलों का गठन किया जाएगा। हर पंद्रह बीस बूथों पर एक मंडल होगा। तीन से चार मंडलों पर एक ब्लॉक का गठन किया जाएगा। इसके गठन के लिए भी एक प्रक्रिया अपनाई जाएगी। माकन ने बताया कि अक्सर चुनाव के समय ही हम कुछ

प्राइवेट एजेंसी से सर्वे करवाते रहे हैं। लेकिन अब तय किया गया है कि कांग्रेस का इंटरनल पब्लिक इनसाइड डिपार्टमेंट होगा। इस डिपार्टमेंट में शामिल लोग लगातार जनता के बीच फीडबैक लेंगे। उन जनता क्लिन मुद्दों पर क्या चर्चा कर रही है। माकन ने बताया कि यह बात भी सामने आई है कि जो कार्यकर्ता अच्छा काम कर रहे हैं, उनको रिवाइड नहीं दिया जाता है और जो काम नहीं कर रहे हैं या खराब काम कर रहे

हैं, उन्हें सजा नहीं मिलती है। इसको लेकर कांग्रेस में असेसमेंट विंग बनाने का सुझाव है। यह विंग तय करेगी कि कौन कार्यकर्ता बेहतर काम कर रहा है और उसका क्या रिवाइड देना चाहिए? जो लोग खराब काम या पार्टी के विरोध में काम करेंगे, उन्हें सजा का प्रावधान किया जाएगा। कांग्रेस के नेता माकन ने कहा कि हम पार्टी में अनुशासन को और मजबूत करेंगे। इसके लिए हर स्तर पर अनुशासन कमेटी बनेगी। शिविर में इस

■ कांग्रेस का इंटरनल पब्लिक इनसाइड डिपार्टमेंट होगा जिसमें लोग जनता के बीच से फीडबैक लेंगे।

■ कांग्रेस पार्टी के ढांचे में अब बूथ लेवल से लेकर ऊपर तक बदलाव किया जा रहा है

पर चर्चा की जाएगी।

माकन ने बताया कि चिंतन शिविर में जो कमेटीयां गठित की गई हैं, उनमें पचास प्रतिशत लोग 50 साल से कम उम्र के हैं। आगे भी इसको लागू रखा जाएगा कोई भी व्यक्ति पांच साल से अधिक किसी एक पद पर नहीं रह सकेगा। इन पदाधिकारियों को अपनी परफॉर्मस देनी होगी। अच्छा काम नहीं करने पर उन्हें तीन साल तक पद से मुक्त रखा जाएगा। पार्टी में काम करने पर आगे मौका दिया जाएगा। यही हमारे नवसंकल्प होंगे।

सांभर के वार्ड 22 में चार पेयजल लाइन होने के बाद भी पानी को तरसते लोग

सांभरझील, (निसं)। यहां के वार्ड-22 में जलदाय विभाग की कई दशकों पुरानी चार पेयजल लाइनें बिछी होने के बावजूद चारपुजा गली के बांशिदों को एक एक बूंद पानी के लिये मशक्कत करनी पड़ रही है लेकिन लोगों व

पार्श्व की ओर से कई दफा शिकायत किये जाने के बावजूद स्थानीय जन स्वास्थ्य अभियंत्रिकी विभाग के अभियन्ताओं की ओर से इस ज्वलंत समस्या को हलके में लिया जा रहा है। बताया जा रहा है कि यहां उपभोक्ताओं को खुद की आवश्यकता की पूर्ति के लिये निजी टैंकर मंगवाये जाने के अलावा दूसरा कोई विकल्प ही नहीं बचा है। जबकि यहां के उपभोक्ताओं से जलदाय विभाग पानी के बिल की पूरी राशि वसूल कर रहा है। प्राप्त जानकारी के अनुसार पुरानी कोर्ट के पास पानी इतना कम प्रेशर से लोगों के घरों में पहुंच रहा है कि रोजमर्रा की जिंदगी के लिये वह

■ लोगों को हर माह निजी टैंकरों और जलदाय विभाग के बिलों का भुगतान भी करना पड़ रहा है

■ नयी पेयजल लाईन बिछाने का काम दलगत राजनिती के चलते अमल में नहीं आ सका

पर्याप्त नहीं बताया जा रहा है, महज बीस मिनट की पेयजल सप्लाई ही लोग बताया जा रहा है, जबकि विभाग उपभोक्ताओं से औसत के आधार पर बिल राशि वसूल कर विभाग उपभोक्ताओं के अधिकारों का हनन कर रहा है। यहां के लोगों से बात करने पर बताया गया कि माह में कम से कम दो टैंकर पानी के मंगवाये हो पड़ते हैं, लेकिन उन लोगों को अधिक मुश्किल हो रही है जिनके घरों में पानी स्टोर करने के लिये या तो होद नहीं है या जगह के अभाव में बहुत ही छोटे हैं। एक दफा यहां पर पुरानी कोर्ट के पास ऊंचाई वाले स्थान पर पेयजल टंकी बनावाकर नयी पेयजल लाईन

बिछाने का लोगों को करीब तीन चार साल पहले ख्वाब दिखाया गया था, लेकिन दलगत राजनीती के चलते न तो इस योजना पर विभाग अमल कर सका और न ही सरकारी कार्रवाई ने इस दिशा में कोई रुचि दिखायी। यहां की कांग्रेस पार्श्व दलगत ज्योति कुमावत से बात करने पर बताया गया कि उनकी तरफ से विभाग को एक से अधिक पत्र लिखे जा चुके हैं, विभाग की ओर से कोई सुनवायी नहीं की गयी है तो अब जलदाय मंत्री को लिखा गया है, यहां के लोगों को आज भी उम्मीद बनी हुयी है कि सरकार इस दिशा में कोई न कोई समाधान जरूर निकालेगी।

देश की जनता का ध्रुवीकरण कर भाजपा जनता को भय व चिंता में रहने को मजबूर कर रही है : सोनिया गांधी

उदयपुर, (कासं)। उदयपुर में कांग्रेस के 'नवसंकल्प चिंतन शिविर' का आगाज शुक्रवार को कांग्रेस राष्ट्रीयध्यक्ष सोनिया गांधी की उपस्थिति में हुआ। इस दौरान कांग्रेस के राष्ट्रीयध्यक्ष सहित कई कांग्रेस के वरिष्ठ नेता भी उपस्थित थे।

इस अवसर पर अपने संबोधन में सोनिया गांधी ने कहा कि यहां जो हमारा चिंतन शिविर हो रहा है, उसका प्रसंग है 'नव संकल्प'। यह हम सबको एक अवसर देता है, जहां हम सब विचार-विमर्श करें उन तमाम चुनौतियों पर जो भाजपा की नीतियों और आरएसएस से जुड़ी संस्थाओं की गतिविधियों के चलते, आज देश के सामने है। हम विमर्श करें अपने आगे के रास्ते पर। यह एक तरह से न केवल राष्ट्रीय मुद्दों पर एक चिंतन है, बल्कि एक आत्म-चिंतन भी है।

उन्होंने कहा कि मैं जानती हूँ, हमारे साथी यहां आना चाहते थे। इस चिंतन शिविर में भाग लेने चाहते थे लेकिन कई कारणों से हमें संख्या को सीमित रखना पड़ा। मुझे पूरा भरोसा है कि वे इस बात को समझेंगे। संगठन को मजबूत बनाने में उनका योगदान किसी से भी कम नहीं है। सोनिया गांधी ने कहा कि भाजपा की केन्द्र सरकार देश में निरंतर ध्रुवीकरण कर लोगों को चिंता, भय और असुरक्षा के माहौल में जीने को



कांग्रेस के 'नवसंकल्प चिंतन शिविर' को राष्ट्रीय अध्यक्ष सोनिया गांधी ने सम्बोधित किया।

मजबूर कर रही है। अल्पसंख्यक जो हमारे गणतंत्र के बराबर के नागरिक हैं, जो हमारे समाज के अटूट अंग हैं, उन्हें जान-बूझकर निशाना बनाया और उन पर क्रूरता से हमला करना, समाज में युगों से चली आ रही विविधता का दुरुपयोग करके उसे बांटना और समाज में बड़ी सावधानी से पालन-पोषण किए गये अनेकता में एकता के सिद्धांत को तबाह करना, अपने

राजनीतिक विरोधियों को डराना-धमकाना, उनकी छवि को नुकसान पहुंचाना, उन्हें झूठे बहानों से जेल में डालना और उनके खिलाफ जांच एजेंसियों का गलत इस्तेमाल करना, तमाम लोकतांत्रिक संस्थाओं की स्वतंत्रता और निष्पक्षता के साथ खिलवाड़ करना, इतिहास के नाम पर धोक में झूठ परोसना और हमारे महान नेताओं विशेष तौर पर जवाहरलाल

नेहरू को बदनाम करना, उनके योगदान, उपलब्धियों और बलिदानों को एक सोची समझी रणनीति के तहत नीचा दिखाया या उनका खंडन करना, महात्मा गांधी के हत्यारों और उनके वैचारिक पथ प्रदर्शकों का महिमा मंडल करना, देश के संविधान में सिद्धांतों, आदर्शों और उसके चार स्तम्भ- न्याय, स्वतंत्रता, समानता व भाईचारे का खुलकर उल्लंघन करना

■ उदयपुर में कांग्रेस के 'नवसंकल्प चिंतन शिविर' का राष्ट्रीय अध्यक्ष सोनिया गांधी की उपस्थिति में आगाज

आदि शामिल है।

सोनिया ने कहा कि हर संगठन की तरह हमें सुधारों की सख्त जरूरत है : रणनीति में बदलाव, बांकागत सुधार और रोजाना काम करने के तरीके में परिवर्तन। एक तरह से यह सबसे बुनियादी मुद्दा है लेकिन मैं यह भी जोर देकर कहना चाहती हूँ कि हमारा पुनरुत्थान सिर्फ एक विशाल सामूहिक प्रयासों से ही हो पाएगा और वो विशाल सामूहिक प्रयास न टाले जा सकते हैं न ही टाले जाएंगे।

सोनिया गांधी ने अपने संबोधन में सभी से आग्रह किया कि वे अपने विचारों को खुलकर रखें मगर, बाहर सिर्फ संगठन की मजबूती, दृढ़ निश्चय और एकता का संदेश ही जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि हाल में 'मिली नाकामबियों से हम बेखबर नहीं है। न ही हम बेखर है उस संघर्ष से या उस संघर्ष की कठिनाइयों से, जिसे हमें करना है और जीतना है। लोगों को हमसे जो उम्मीदें हैं, उनसे हम अनजान नहीं हैं।

राशिफल

शनिवार 14 मई, 2022

वैशाख मास, शुक्ल पक्ष, त्रयोदशी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत् 2079, चित्रा नक्षत्र सांय 5:28 तक, सिद्ध योगदिन 12:58 तक, तैलक करण दिन 3:23 तक, चन्द्रमा आज प्रातः 6:12 पर तुला राशि में प्रवेश करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मेघ, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-कुम्भ, बुध-वृष, गुरु-मीन, शुक-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मेघ, केतु-तुला राशि में।

सर्वोर्ध सिद्धि योग सांय 5:28 से सूर्योदय तक है। रवियोग सांय 5:20 से आरम्भ होगा। आज ज्येष्ठा संक्रान्ति, सूर्य का वृष में प्रवेश रविवार प्रातः 5:30 से होगा। पूष्यकाल रविवार को है। आज श्री गुरुिंह जयन्ती और व्रत है।

श्रेष्ठ चौबिडिया: शुभ 7:24 से 9:03 तक, चर 12:23 से 2:03 तक, लाभ-अमृत 2:03 से 5:23 तक।

राहुकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 5:44, सूर्यास्त 7:02

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।	विविधता मामलों से राहत मिल सकती है। परिचितों चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। दिनचर्या में सुधार होगा। मन का भय समाप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।	व्यावसायिक कार्यों को प्रार्थमिकता से करने का प्रयास करें। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।	परिवार में आपसी सहयोग बढ़ेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।	परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। नये-पुराने मित्रों से मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।	आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए अति अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में मिलाने का विचार होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। आर्थिक मामलों में प्रगति होगी। धन प्राप्त होगा।
तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।	धार्मिक कार्यों में धन खर्च हो सकता है। अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।	आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में विवादों से राहत मिल सकती है। अटके हुए व्यावसायिक कार्य बने लगे। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।	व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बने लगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक कार्यों में विवादों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।	नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बने लगे। धार्मिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। आर्थिक मामलों में प्रगति होगी। धन प्राप्त होगा।	चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ रहेगा। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। आवश्यक कार्यों यात्रा टालना ठीक रहेगा। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।